पवित्र रक्षाबंधन पर्व की कोटी-कोटी बधाईयाँ

प्रिय आत्मन् ———————————————————————————

स्नेह वाहिनी, शक्ति दायिनी, मन भावनी पावन राखी में पवित्रता का प्रकाश और रूहानियत का तेज समाया है। सारे विश्व को भाई-भाई की भावना से जोड़ने वाले इस पर्व का स्वागत प्रकृति भी अपनी शीतल फुहारों, हरितिमा से ढ़की धरती और मोर के नृत्य के साथ करती है।

वर्तमान समय मानवता भय के साए में जी रही है। तन की, धन की, धर्म की, सम्बन्धों की सुरक्षा का प्रश्न सभी के मन को मथ रहा है। ऐसे में परमपिता परमात्मा शिव की ओर से रक्षा-कवच के रूप में प्रदान किया जाने वाला यह रक्षा-सूत्र ईश्वरीय वरदान ही है। परमात्मा पिता आत्माओं के पिता हैं। स्त्री चोले या पुरुष चोले के आधार पर उनको कोई भेद नहीं हैं। इसलिए नर-नारी दोनों ही इस सूत्र को स्नेह से स्वीकार कर सकते हैं। यह पर्व हम सभी को प्रेरणा देता है कि हम अपने मन को ज्ञान, पवित्रता, शान्ति, प्रेम, खुशी, आनन्द और शक्ति के सप्त रंगों से रंग लें तथा इन गुणों की खुशबू से प्रकृति सहित सम्पूर्ण विश्व को महका दें।

हम देख रहे हैं कि भ्रष्टाचार की उग्र ज्वाला भी आज हर इन्सान को तपा रही है परन्तु इसी तपत के बीच परमात्मा पिता गुप्त रूप से श्रेष्ठाचार की स्थापना कर कर्त्तव्य कर रहे हैं। शिघ्र ही दैवीगुणों से सम्पन्न देवी-देवताओं की दुनिया भारत भूमि पर साकार होने वाली है। इसीलिए भगवान शिव का सन्देश है, “पवित्र बनो, योगी बनो” अर्थात् सभी के प्रति भाई-भाई की पवित्र दृष्टि रखते हुए मुझ परमात्मा की प्यार भी स्मृति में रहो। तो आइये, ऐसे अमूल्य, वरदानी, अलौकिक सूत्र को कलाई पर बाँधें, आत्म-स्मृति का तिलक लगायें और मधुर बोल की अविनाशी मिठाई सबमें वितरित करें।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की प्लेटिनम जुबली (75 वर्ष) के शुभ अवसर पर हार्दिक शुभ कामना है कि यह पर्व आपके जीवन को खुशियों से भर दे।

मन भावन त्योहार है राखी
परमपिता का प्यार है राखी
पवित्रता का उपहार है राखी
श्रेष्ठाचार का आधार है राखी

– सेवाकेन्द्र –

....

....

....

ईश्वरीय सेवा में,
आपकी दैवी बहन

....